P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्त्री की मर्मान्तक पीड़ा का जीवन दस्तावेज 'वह लड़की'

हेमन्त कुमार
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
जय नारायण व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.) भारत

सारांश

'वह लड़की' उपन्यास के माध्यम से डॉ. सुशीला टाकभौरे ने समाज में महिलाओं पर सदियों से होते आये अत्याचार अपमान के खिलाफ महिलाओं को संघर्ष कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देने का प्रयास करते हुए भारतीय समाज में जो कुप्रथायें है उनका विरोध किया है एवं उनके खिलाफ आवाज उठाने का प्रयास किया है। समाज में जो बाल विवाह होते है उनके कारण बालिकाओं को जो समस्याऐ होती है उनका जिक्र करते हुये उनके खिलाफ लड़ने की प्रेरणा दी है एवं लड़के व लड़की को समाज में समान मानना चाहिए आज के दौर में लड़का व लड़की समान होते है उनमें किसी प्रकार का भेद नहीं करना चाहिए तथा इसके साथ ही शिक्षा के माध्यम से एवं सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से ऐसी महिलाओं को प्रेरणा देने का प्रयास किया है जिनके ऊपर समाज में अत्याचार एवं अपमान हो रहा है तथा बाल विवाह व समाज में जो अनेक प्रकार की कुप्रथायें जो महिलाओं के खिलाफ है उनको तोड़ने का प्रयास किया है 'वह लड़की उपन्यास स्त्रियों की मर्मान्तक पीड़ा एक जीवन्त दस्तावेज है जिसमें देश में महिलाओं के खिलाफ हो रहे अत्याचार का वर्णन है जिसका उद्देश्य है महिलाओं को अन्याय व अत्याचार का विरोध कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देना।

मुख्य शब्द : संघर्ष, बन्धन, दस्तावेज, प्रगति, अन्याय, शोषण, हेय, अत्यन्त, तपस्या, उत्पीड़न, आडम्बर, प्रताड़ना, अपहरण, जागृति, परम्परा, आज्ञाकारिणी, अनुभागिनी, सहनशील, मूकप्राणी आदि।

प्रस्तावना

'वह लड़की' उपन्यास में नारी जीवन के संघर्ष की कथा है इस उपन्यास की लेखिका सुशीला टॉकभौर आज इक्कीसवीं सदी की दुनियाँ में सामाजिक परिवर्तन की नायिका के रूप में हिन्दी साहित्य में अनवरत संघर्षशील है आपके जीवन का लक्ष्य समाज में स्त्रियों व दलितों के अधिकारों एवं उनको उनका सम्मान दिलाने व उनके ऊपर लगाये गये समाज के बन्धनों को तोड़ने के लिये उनको शिक्षा की प्राप्ति करना आवश्यक है हमारे समाज में नारी को हमेशा से हाशिए पर रखा गया है। सामाजिक परिस्थितियों के कारण न तो वह अपना विकास कर पाती है न ही शिक्षा प्राप्त कर पाती है। वह हमेशा से समाज में शोषित होती रही है 'वह लड़की' उपन्यास के माध्यम से सुशीला टॉकभौर स्त्रियों को प्रेरणा देना चाहती है कि स्त्रियां अन्याय का विरोध कर उसके खिलाफ लड़ सके।[1] लेकिन फिर भी समाज में स्त्रियों पर लगातार अन्याय व अत्याचार हो रहा है। स्त्रियों पर समाज ने अनेक प्रकार के बन्धन लगा रखे है जिसके कारण स्त्रियों का विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाता है। यह उपन्यास समाज में स्त्रियों के प्रति पुरूषों को नजरिया बदलने का एक जीवन्त दस्तावेज है महिलायें अपने अच्छे जीवन के लिये अपनी प्रगति और सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के लिए अपने निर्णय स्वयं लेगी तभी वे अन्यायपूर्ण समाज व्यवस्था व परम्पराओं को बदल सकेगी इस उपन्यास की पात्र 'शैला' एक पढ़ी लिखी शिक्षित महिला है। जो अन्याय व शोषण के खिलाफ आवाज उठाने का प्रयास करती है ''ऐसा धर्म, ऐसी परम्पराये जो हमारे साथ अन्याय करते है उन्हें मानना धर्म नही है। चुपचाप अन्याय सहन करना धर्म नहीं है उनका विरोध करना चाहिए'' सुशीला टाकभौरे का मानना है कि अब समय बदलना चाहिए, नारी को अपना जीवन अपने तरीके से जीने का हक पुरूषो की तरह ही मिलना चाहिए।

शोध का उद्देश्य

इस लेख का उद्देश्य महिला उत्पीड़न से मुक्ति की लड़ाई जो सबको दिखाई तो देती है और समाज इसको देखता भी है लेकिन इसके खिलाफ आवाज नहीं उठाता है जो इस लड़ाई से पीड़ित है वह इसको भोगती है समाज में महिलाओं में जागृति लाकर इस लड़ाई को समाप्त करना चाहिए एवं ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करनी चाहिए जिससे समाज में महिलाओं के

प्रति 'अबला' की मानसिकता को बदलकर नारी के सबल रूप में स्थापित कर नारी मुक्ति का उद्देश्य बने नारी शोषण व अपमान के खिलाफ व अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों का विरोध करने का उद्देश्य निहित है।

1. हिन्दी साहित्य में दलित स्त्री–लेखन की प्रमुख समस्याओं व चुनौतियों को स्पष्ट करना।
2. समाज में नारी के प्रति जो सोच है उसे बदलने का प्रयास कर महिला शिक्षा को बढ़ावा देना जिससे नारी को समान अधिकार मिलें।
3. दलित साहित्य के मुख्य उद्देश्य मानवीय समता स्वतन्त्रता एवं बन्धुत्व को समाज में स्थापित करना।
4. दलित महिलाओं के प्रति समाज में जो घृणा मूलक वातावरण है उसकी शिक्षा के माध्यम से मिटाने का प्रयास करना।

साहित्यावलोकन

सदियाँ गुजर जाने के पश्चात् आज भी नारी का जीवन संघर्षमय बना हुआ है। उसे समाज में सदैव ही हेय दृष्टि से देखा गया है। पुरूष प्रधान समाज स्त्री को सुख भोग की वस्तु समझता रहा है। उसे समाज में जो स्थान मिलना चाहिए था वह स्थान उसे नहीं दिया गया। आदिकाल से लेकर आज तक नारी की स्थिति दयनीय बनी हुई है। सदियों पहले जो नियम स्त्रियों के लिये बनाये गये थे बहुत कुछ उन्हीं नियमों को आज भी स्त्रियों पर लागू किया जा रहा है इन नियमों का पालन स्त्रियों के लिये किसी कठिन तपस्या से कम नहीं है।

स्त्रियों के उत्पीड़न शोषण और दासता का इतिहास उतना ही पुराना है जितना असमानता और उत्पीड़न पितृप्रधान सामाजिक व्यवस्था प्राचीन काल से ही नारी उत्पीडन की प्रेरक रही है। धार्मिक आडम्बरों के तहत स्त्री को सभी अधिकारों से वंचित किया गया। यद्यपि वैदिक काल में स्त्री को देवी तथा गृहस्वामिनी के रूप में माना जाता था लेकिन इस दैवीय रूप के पीछे भी मात्र छलावा था। मध्ययुग में नारी भोगविलास की वस्तु के रूप में व श्रृंगार के रूप में चित्रित की गई। स्त्री को सभी अधिकारों से वंचित रखा गया। महिलाओं की स्थिति सबसे अधिक मध्यकाल में तथा उपनिवेशवाद के समय भयावह रही। उस समय बाल विवाह, सती प्रथा, विधवा अभिशाप, प्रदा प्रथा तथा दक्षिण भारत में देवदासी प्रथा प्रचलन में थी ये सभी प्रथाये समाज में स्त्रियों के विरूद्ध थी इन सभी कुप्रथाओं से स्त्रियों की स्थिति नाजुक हो गयी। ''प्रारम्भिक तीनों कालो में नारी श्रृंगार रस की सामग्री बन गयी उसको उबड़ खाबड संघर्षमय जीवन का चित्रण इतिहास में न के बराबर है।''[2]

''मध्यकाल में भी गोस्वामी तुलसीदास जी ने नारी की अवेहलना के साथ उसे समाज से तिरस्कार का भागी ठहराया है। उन्होंने माता तुलसी और पत्नी रत्नावली को फटकारा है।

''ढोल गंवार, शूद, पशु नारी
ये सब ताड़ने के अधिकारी।''[3]

एक सर्वेक्षण के अनुसार महिला के खिलाफ अपराध को छह श्रेणियों में विभाजित किया गया है –''बलात्कार, छेड़खानी, यौन–प्रताडना घर में पति एवं अन्य सम्बन्धियों द्वारा प्रताड़ना अपहरण तथा दहेज हत्या आदि।[4]

प्रसिद्ध दलित लेखिका सुशीला टाकभौरे ने अपने कथा साहित्य में दलित स्त्रियों की पीड़ा को उकेरा है, उन्होने अपने उपन्यास 'वह लड़की' के माध्यम से समाज के अन्दर फैली कुप्रथा एवं दलित महिलाओं के जीवन के चित्र उकेरा है। इस उपन्यास के माध्यम से उन्होंने महिलाओं को सशक्त बनने व अपना स्वयं का वर्चस्व बनाने के लिये महिलाओं को आगे आने पर बल दिया है। समाज व महिलाओं को सुधारने के लिये इस उपन्यास की नायिका ''शैला'' अपने प्रयासों के माध्यम से समाज की सभी महिलाओं को अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों से लड़ने के लिये जागरूक करने का प्रयास भी करती है। शैला का मानना है कि क्या बन्धन औरतों पर ही होना चाहिए? पुरूषों पर क्यों नहीं? औरते हमेशा ही अपने जीवन में कष्ट उठाती है। हर किसी का अत्याचार सहती है शैला की बहन शम्मा पर भी ऐसे ही अत्याचार होते रहते है। वह हमेशा उसे समझाती है कि अन्याय के खिलाफ आवाज उठाओ लेकिन शम्मा हमेशा कह देती है कि मेरे नसीब में ये ही है कहकर चुप कर देती है जबकि शैला उसको समझाती है कि व्यक्ति अगर अन्याय सहता रहता है तो उसके ऊपर अधिक अन्याय किये जाते है लेकिन अगर व अन्याय का विरोध करता है तो अन्याय करने वाले की हिम्मत नहीं होती है। शैला चाहती है कि ''समाज में ऐसी जागृति लानी चाहिए जिससे गुनहगार की अन्यायी अत्याचारी की कड़ी से कड़ी सजा दी जाए, ताकि किसी की बेटी को इस तरह जिन्दगी से और मौत से न जुझना पड़े।[5]

शम्मा के माता–पिता ने शम्मा को पढ़ा लिखाने की अपेक्षा उसकी बचपन में ही शादी कर देते है। क्योंकि प्राय हमारे समाज में धारणा है कि माता–पिता बेटियों को एक प्रकार से बोझ समझते है माता–पिता अपने इस बोझ से जल्दी से परे होना चाहते है। शम्मा की 15 वर्ष की उम्र में शादी होने के कारण व शादी के एक साल बाद मां बन जाती है। लेकिन सास–ससुर लड़के की चाह रखते है। इस चक्कर में शम्मा के चार लड़कियां हो जाती है जिसके कारण वह कमजोर होती चली जाती है और बीमार हो जाती है जिसके कारण उसकी दो वर्ष अस्पताल में रहने के बाद मृत्यु हो जाती है।

शम्मा की तरह ही भारत में लाखों बालिकाओं की शादी कम आयु में कर दी जाती है जिसके कारण वे असमय ही मां बन जाती है। कई बालिकाये तो प्रसव के समय ही मर जाती है तथा जो बचती है वे अपने बच्चों का सही तरह से लालन–पालन नहीं कर पाती है। तथा अधिकांश परिवारों में लड़के की चाहत में लड़किया ही पैदा होती चली जाती है जिसका दोष भी स्त्री को ही दिया जाता है। ''आदिकाल में रानियों को पुत्र प्राप्ति न होने के अपराध का सामना करना पड़ता था।[6] वैसे ही आज भी उन महिलाओं अपराध का सामना करना पड़ता हैं। आज भी शम्मा जैसी अनेक लड़कियों पर अन्याय अत्याचार हो रहे है। कही मायके में तो कही ससुराल में। कहीं नारी होने के कारण तो कही जाति के कारण शोषण हो रहा है। हिंसा अपमान और बलात्कार हो रहे है।

लड़कियों से जिन्दा रहने का हक छीना जा रहा है उनको मौत के मुँह में धकेलकर उनकी हत्या की जा रही है।

सदियों से यही परम्परा रही है सदियों से यही चला आ रहा है पुरूष प्रधान समाज में सारे अधिकार पुरूषों को ही मिले हुए है। इसी के बल पर वह स्त्री को शोषित पीड़ित करता है। और वह इस पर खुश होता है औरत के साथ होने वाले इस अन्याय में पुरूषों का साथ औरते भी देती है उपन्यास की एक पात्रा 'नमिता' को उसकी काकी सास यही समझती है–

''औरत का दिल तो धरती की तरह है। वह सब कुछ सहकर भी अपनी धुरी पर धूमती रहती है। ऐसी ही औरत जात होती है। इसी में उसकी मर्यादा है, इसी में उसकी भलाई है।[7]

इस प्रकार की सोच को बदलने की आवश्यकता है समाज में स्त्री पुरूष की समानता का प्रसार हो कि एक दूसरो को पूरक मानेगे तब समाज आगे बढ़ेगा।

नमिता इस उपन्यास की दूसरी अपेक्षित पात्र है उसके साथ भी ऐसा ही होता है वह 10 वीं तक पढ़ी लिखी है माता–पिता गरीब थे जिसके कारण नमिता को पढ़ा नहीं पाये थे उसकी शादी नागपुर में कर दी जाती है। शादी भी माता–पिता ने अपनी हैसियत से अधिक कर्जा लेकर की थी ताकि बेटी को कोई कुछ कहे नहीं फिर भी नमिता के सास ससुर ताने देते रहते थे कि तेरे माता–पिता ने क्या दिया है। नमिता की सास–ननद गुस्से से उसे कहती थी ''कितना घटिया सामान मिला है कितना कम दहेज मिला है।''[8] इस प्रकार नमिता को सुनाकर परेशान करती है। सास ससुर व ननद के अलावा उसका पति भी नमिता को कई प्रकार की घटिया बाते पूछ–पुछ कर परेशान करता रहता था। लेकिन नमिता को उसकी बचपन की दोस्त शैला उसको समझाती है कि ऐसा कब तक सहन करोगी इनके खिलाफ लड़ोगी तब जाकर कुछ होगा फिर एक दिन नमिता के पति ने उसके बाल काट दिये उस दिन नमिता ने उनका विरोध कर दिया उस दिन के बाद उसके पति व सास ससुर ने नमिता को परेशान करना बंद कर दिया व सही तरीके से रखने लग गये।

दलित महिलाओं के साथ–साथ सवर्ण समाज की स्त्रियों के हालत भी यही है। पुरूष इन्हे अपनी पैरो की जूती समझते है लेकिन सवर्ण समाज की महिलाये अपने अंहकार में डूबी रहने के कारण अपने शोषण के खिलाफ आवाज नहीं उठाती है अधिकतर बहुओं के लिये यह आदेश रहता है कि बाहर से आने वालों के सामने वे न आए। इक्कीसवी सदी में भी हमारे समाज की ऐसी घटिया परम्पराये है। लेकिन फिर भी वो इन परम्पराओं का विरोध नहीं करती है।

शैला जैसे लोग समाज में जागृति का काम करते है तो लोग उनका सहयोग करते है उनके सम्मेलन भाषण में भाग लेते है वे भी अपने घर में वैसा ही करते है जो उनको अच्छा लगता है 'ममता' की सास 'कमला' नहीं चाहती है कि उसकी बहू शैला से मिले क्योंकि उसे डर रहता है कि शैला उच्च शिक्षित साहसी संबल नारी है। कही मेरी बहु को ऐसी नहीं बना दे क्योंकि ममता के लगातार चार लड़कियाँ लड़के की चाहत में हो जाती है शैला के समझाने पर भी की लड़का व लड़की में कोई अन्तर नहीं होता है फिर भी वह नहीं मानती है और दो के बाद दो लड़की हो जाती है उसके बाद उसके समझ में आती है। कि लड़का व लड़की में कोई अन्तर नहीं होता है। जब तक जाकर वह परिवार नियोजन अपनाती है।

आज देश में लड़के की चाहत में लाखों महिलाओं के लड़कियाँ होती है क्या यह सही है? जबकि आज के दौर में लड़के व लड़की में कोई अन्तर नहीं होता है लेकिन आज भी देश में लाखो बच्चियों की तो कोख में ही मार दिया जाता है। या पैदा होते ही मार दिया जाता है। इसके कारण देश में पुरूषों की तुलना में महिलाओं का अनुपात कम होता जा रहा है।

इसीलिये 'शैला' दलित व गैर दलित समाज की स्त्रियों की ऐसी शोषित पीड़ित स्थिति देखती है तो उसका हृदय आक्रोश से भर जाता है। नारी मुक्ति आन्दोलन के कार्यक्रमों में ऐसी (ममता) महिलाओं का उदाहरण देकर शैला नारी जागृति का संदेश देती है। वह अपने भाषण में महिलाओं का हौसला बढ़ाने के लिये आवेश के साथ कहती है – ''हम भारत देश की नारी है हम फूल नहीं चिनगारी है।[9] नारी की सबलता व जागरूकता अति आवश्यक मानती है। शैला और निशा अखिल भारतीय दलित महिला जागृति नामक संस्था के माध्यम से अखिल भारतीय स्तर पर देश के सभी प्रान्तों की दलित पिछड़ी महिलाओं को अपनी संस्था में जोड़कर लाभान्वित कर रही है।

स्वयं निशा के साथ अन्याय होता है निशा के माता–पिता ने उसको बड़ी कठिनाई से तो पढ़ाया जब पैसो की दुखी रहती तो लड़कियों की पढ़ाई रोक दी जाती थी लेकिन निशा बताती है हम तीन बहने दो भाई इनमें निशा ने बचपन से ही अन्याय के प्रति विरोध और प्रतिकार की भावना थी वह कहती थी ''क्यों क्या लड़कियों को पढ़ने और आगे बढ़ने का अधिकार नहीं है? जो सहुलियत भाईयों को मिलती है। वे हमें भी मिलनी चाहिए।[10] लेकिन लड़को के जैसी सहूलियत नहीं मिली फिर भी निशा ने अपने स्तर पर मेहनत मजदूरी करके स्वयं व अपनी दोनों बहनों को पढाया व तीनों बहनों ने अन्तर जातीय विवाह किया। लेकिन निशा का पति निशा को परेशान करता है पति की शिकायत रहती है कि निशा मेरे प्रति अपना कर्तव्यपूर्ण रूप से नहीं निभाती है उसका मानना है कि पत्नी का अर्थ है –''पति को दासी आज्ञाकारिणी, अनुगामिनी, सहनशील, मुरूप्राणी होता है।'' लेकिन निशा ने अपने पति को समझाया भी ऐसा नहीं हो सकता है क्योंकि निशा पति की सेवा के साथ–साथ समाज सेवा का कार्य भी करती है। मगर पति का अहम भाव इसे सहन नहीं कर सका फिर पति के तानाशाही व्यवहार से तंग आकर निशा पति से अलग रहने लगती है। इसी लिये शैला कहती है ''हम स्त्रियों पर अन्याय करके पुरूष अपने समाज की उन्नति को रोकते है स्त्रियों के विकास से ही समाज का विकास हो सकता है मगर पुरूष अपने स्वार्थ के कारण इस बात को महत्व नहीं देते।[11]

निशा दलित शोषित पीड़ित हर महिला की मदद के लिये हमेशा तैयार रहती है वह पीड़ित महिलाओं को अपनी संस्था में कोई न कोई काम दिलाने का प्रयत्न करती है निशा के साथ ऐसी ही एक महिला रहती है। जिसका नाम रेणुका है वह विहार की रहने वाली है उसके सास–ससुर व जेठ ने उसको परेशान कर उसकी जमीन को हड़प लिया था जेठ रेणुका पर गलत नजर रखता था क्योंकि रेणुका की शादी 10 वर्ष की उम्र में हो जाती है वह भी 30 वर्ष के व्यक्ति से जो बीमार रहता है तथा 14 वर्ष की उम्र में एक बच्चा हो जाता है बचपन में शादी होने के कारण पति से डरती थी बीमारी के कारण पति की मृत्यु हो जाती है। घर पर रहकर मजदूरी करके बच्चे को पाल रही थी लेकिन जेठ के साथ–साथ ससुर भी गलत तरीके से देखता था जिसके कारण रेणुका अपनी बड़ी दीदी के पास आ जाती है लेकिन वहां जीजा गलत नजर डालने का प्रयास करता है जिसके कारण रेणुका वहां से भी भागकर दिल्ली आ जाती है वहां उसको निशा की सहायता मिलती है जिसकी बदौलत व अपने बेटे को पढ़ाती है और अपने जैसी महिलाओं की मदद की सोचती है समाज में हर किसी को ऐसी शोषित महिलाओं की मदद करने की आवश्यकता है। पर पहले शोषित महिला अपने ऊपर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने की कोशिश करे तभी समाज व अन्य लोग मदद करेंगे।

समाज व्यवस्था में स्त्री मनुवादी लिंग भेद से पीड़ित रही है पुरूष शोषित रहकर भी अपनी स्त्रियों को अन्याय और शोषण का शिकार बनाते रहे है इस समाज व्यवस्था को बदलने के लिए लड़कियों को बदलना होगा। वे बदलेगी तो समाज की मानसिकता भी बदलेगी जहां एक स्त्री की जीत वही बाकी स्त्रियों के लिए प्रेरणा बनेगी ''जागरूक नारी ही नारी का कल्याण सफल रूप में कर सकती है।[12] हर वर्ग की स्त्री को उसके अधिकार मिलने चाहिए अगर हमारी समाज व्यवस्था गलत है तो उस समाज व्यवस्था को ही बदल देना चाहिए।

''समाज जागृति दलित मुक्ति और नारी मुक्ति के कार्य बरसो से हो रहे है सबसे पहले तथा गौतम बुद्ध ने ही महिलाओं को समता, स्वतन्त्रता और सम्मान का अधिकार देते हुए उन्हें अपने बैद्ध संघ में प्रवेश दिया। संत कबीर ने अपने साहित्य में ''स्त्री पुरूष समानता और स्त्रियों को सम्मान देने की बात लिखी।''[13] लेकिन आज देश में अनेक संस्थाऐं जो महिलाओं में जागृति लाने का काम कर रही है वे स्त्रियों के साथ होने वाले अपमान के खिलाफ लड़ना व आवाज उठाने में भी मदद करती है। लेकिन देश में आज भी बहुत सी महिलायें खुलकर विरोध नहीं कर पाती है।

वस्तुतः सुशीला टाकभौरे का उपन्यास 'वह लड़की' स्त्री पीड़ा का मर्मान्तक दस्तावेज है सुशीला टाकभौरे इस उपन्यास के माध्यम से न केवल दलित स्त्री की पीड़ा को उजागर करती है अपितु वह पुरूष संज्ञात्मक समाज से मुक्ति के लिये स्त्री को संघर्ष के लिये तैयार करती है इस उपन्यास में चेतना का वह प्रवाह है जो स्त्री को उसकी शक्ति का अहसास करता है इसलिये यह उपन्यास स्त्री सशक्तिकरण का प्रेरणा स्तम्भ है।

निष्कर्ष

इस उपन्यास में नारी के जीवन संघर्ष की व्यथा है आज समाज में शिक्षा जागरूकता होने के बावजूद भी स्त्रियों पर अपमान व अत्याचार हो रहा है हम सम्मेलनों व भाषणों में नारी की मुक्ति के नारे लगाते है पर अपने आस पास हो रहे नारी अत्याचार को रोकने का प्रयास नहीं करते है इस उपन्यास के माध्यम से सुशीला टाकभौरे ने समाज में स्त्रियों के प्रति पुरूषो का दृष्टिकोण बदलने का जीवन्त दस्तावेज दिया है। इसके माध्यम से स्त्रियां अपने भविष्य के लिये अपनी उन्नती के लिये आगे आयेगी तभी ही वे अन्यायपूर्ण समाज व्यवस्था और रीति परम्पराओं को बदल सकेगी। 'वह लड़की' उपन्यास से नारी समाज में एक जागृति की लहर आएगी व अपने ऊपर होने वाले अत्याचार व अपमान व शोषण का विरोध करेंगे।

अंत टिप्पणी

1. *'वह लड़की' उपन्यास, पृ.स. 22*
2. *दलित लेखक में स्त्री चेतना की दस्तक, शिवरानी प्रभात युहान, पृ.स. 326*
3. *वही पृ.स. 324*
4. *इक्कीसवी सदी की और सुभन कृष्णकान्त पृ.स. 158*
5. *'वह लड़की' उपन्यास पृ.स. 30*
6. *दलित लेखन में स्त्री चेतना की दस्तक, शिवारानी प्रभात युहान, पृ.स. 324*
7. *'वह लड़की' उपन्यास, पृ.स. 68*
8. *'वह लड़की' उपन्यास, पृ.स. 46*
9. *'वह लड़की' उपन्यास, पृ.स. 71*
10. *'वह लड़की' उपन्यास, पृ.स. 71*
11. *'वह लड़की' उपन्यास, पृ.स. 69*
12. *'वह लड़की' उपन्यास, पृ.स. 163*
13. *'वह लड़की' उपन्यास, पृ.स. 109*